This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

श्री [illegible] नमः [illegible] कु [illegible] जीवो [illegible] निजगः॥ केतुर्नेग्य [illegible] हाएतेपा
तुधो [illegible] हि [illegible] ॥१॥ [illegible] न्यादिनं सु [illegible] नि भानियेस्न [illegible] नानिव॥ या [illegible]
धुटिका [illegible] शाहिताल्लिव॥२॥ एवं [illegible] निजशा मध्य वि [illegible] शोधये
तु॥ [illegible] स्पा [illegible] मौमं [illegible] विहि [illegible] ना ७॥३॥ सन दिशे
१० [illegible] १२ कु [illegible] १२ [illegible] २१॥ [illegible] २५ ध्रुव [illegible] १॥ [illegible]
[illegible] नाम॥४॥ अथ [illegible] यानयनमः॥ [illegible] नादि [illegible] नापा
[illegible] ॥५॥ अर्थ [illegible]
[illegible] नियेदस्थानी [illegible] निवा॥ [illegible] १५ भागे ७
[illegible]

Acc. No. ~~10215~~ M-1883
Title - दशावार दर्शा॰
Author - ?
Date - ?
Sub - ज्योतिष॰
folio - 16
Xerox - 32.

KKSU LIBRARY
RAMTEK
441 106
M-1883
Dist Nagpur

Checked 2012

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ना हुमु रोन नमो संबुरे स्वाद्र वादिं दु जर्वी तिवे दे धं ना सी प्र नाति वे ।। या २ श्वे ह्रीं वृष्टिका
सेवु नं वा फी दिसा द्वा नि रे नो धं श ते बं रस्सा गु तं म २ श न ल पा ते मु ग्वं त ल्ली रे वि दि ळ द श न के ले
मा ।। ५ ।। र वे थ ड द्वा १ श शि नो त व न्हा १ ५ मौ म स्म ना ।। ७ श्वा वि दा दि वन्हे ।। ८ ।। स ने दि श
दस्वगुरोने वा स्मा १ ६ रो रि ता ।। ९ ।। १ २ भु भि या म २ ७ शि त स्य ।। ८ ।। अथ गो दि जो तेषां नेमा ह्
।। पर मायु १ ८ ।। प्रमा ण यु तायेत गो मनो दि ज्ञा ।। तत्र सत्त्व स्यात्र हो स्यां न व न्या २ ० पन मा र पृ वे।
शे बं जे नो र पु सर् डं मधु नं तं म स्थानु पा त तः श ।। धा या यह स्यां व दश न स्य ट ।। १ ० ।। अथ पृ वो ष
त रे रा द्या ~~सि ह्लु स्व्यु~~ ।। आ ई व न य मा न्दु मे वा दि चि न्त ये वि धुः ।। ६ स्या य त्वं भौ मा
मै वा दि वि न्त ये वुधः ।। पर्व वे न त्थ ये ~~न रि श्व को~~ सो रि य ठ ।। चि न्त ये गुरुः ।। अहि पु धा वं तु सा पि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ ग्रह ॥

मगुः स्यात् कृपाजेये ॥१२ अथ पिशेशान्तरिप्रका [illegible] र्॥ ईशेनेन्दु कुजाराहि च्य सेहरुज शिखि भार्गवा

॥ कृतिका हे [illegible] नदेहि पाता [illegible] सोर्पाशा भवेत् ॥१३॥ अथ दशाफलानि ॥ निर्वाप्यादि विधिं ॥२॥

व शत्रुमि नो [illegible] सा [illegible] वतम ॥ अत दशा श भ तिमान धितसेन प्रयत्नो [illegible] तः [illegible] ॥४॥ अत दशा

कंरउमायांसुभो भव [illegible] ति ॥ भवगितिदावुह रा श्वधनजमनादि नतुजानो ॥ रवि वरिताल द्विम

तिथि प्रीतिनि मैलि नजां नयति ॥ मानवशेते विनाशं [illegible] ता पा ना [illegible] मतिर्लनी ॥३॥ हिरा [illegible]

[illegible] खांसि [illegible] य मुके [illegible] संक्रान्ते गीतादेन समये सूर्ये दशनवेपू [illegible] रणी ॥६॥ अस्पाः

[illegible] पत्ने कु जन्म रवे [illegible] शया यातितित्वा भोजः प्राप्तिमानो पुत्र यं मा हान्त मार्था

[illegible] संप्रूस खांसे जा [illegible] संजायते वे वधु सु श्व श मा याम ॥१॥ अस्यां प्रथम मसूवीत दशमाथ

नानियाभिवं । संपसाजं संजायते [illegible] भानो वंधूनां मरणाम येत् ॥ मन्त्यंतर वांतरा दो सर्व मेव फलं पदे

दिः ॥४॥ कुजम ॥ वंधतं स्यांतरे भानो वंधूनां मरणामवेत् ॥

मस
रामः
श्री

[illegible]
[illegible]
॥२॥

ग ना थिवे [illegible] दशाफ
न नो [illegible] मा [illegible]

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त अत्र राजभौता संका ॥ वित प्रक्षे ॥ मित्रविरोधः ॥ पूर्व क्षि...महा प्रानिः ॥ धान सिधा व्यर्थगमनं कु

वित्तवियोगस्य ॥ व्यसनम ॥ ह्य...जा म ॥ ह्य...सनोग्रः ॥ आरोग्य सुख ॥ दा ४ न मध्ये मध्यमं ॥ अति दु

ख्या ॥ अपराधि मध्ये वाद्या नो दिः ४ ॥ मास १० केवेरि पीडिनाशे ... धान्य वित्त ... वादिके म

शे ... ६ फेरा तिमितसे सितम ॥ १ ॥ अत्र शत्रुतो जयः ॥ धानेत रजेतादि प्राप्तिः ॥ सौख्य ॥ उ

२ ... रे तगतीतिः ... ६ ... स्वस्य संभावना ॥ गितथा ... स्त्री प्रीतिः ॥ ... धादि ८ ... ॥ भोगस्य ॥

तम भोजन प्राप्तिः ॥ ... मध्य ५ ... ४ ॥ ... अथ रवि मध्ये भो मा ... विशा

के नापि सह विवादः किं विदुःख प्राप्तिः ॥ ... व्याधी हानि ... ॥ आवि ... सो मे वे

माषा पू ॥ दिन ... सक्त ... ॥ ... रवे रते ... मे वि ... ॥ अस्या

ख्यो कुप्रवाल मु ... तोहमादि ... ॥ ... तो भयं ॥ त्रैयो पादि रांका ॥ सुवे रोगकारादि संका ॥ स

शत्रुतो जयः ॥ संग्रमे जयः ॥ अपि ... तस्कर तो भयं ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥२॥

वस्तुप्राप्तिः॥ ८ न्द्रिरान्तं मे फलम॥ अथपरविमधे वुधांतर्दशा मास॥११॥ दिन १० न स्य फल

म॥ महोत्सानं व्याधिहानिः द्रव्यनाश कुलहयः॥ आयुस्यास मवे स्त्री केशं रतगे रे वुधे॥ अत्र पा

दन्द्र विकार हि रक्तपित्तं वे वा आःगदुपि ग॥ शरिमसुख॥ किं विशतु भयं॥ न पु सखा ड़ं ग॥

पुर्व स्वरदिस तोहानिः॥ मध्यसुख प्राप्तिः॥ आनंद न स्व पुत्रादि जीड़ा॥ अथ मुनिमध्येश नेरन्तर

॥ स्था सा ६॥ दिन २०॥ फल मा॥ मां दुख्योनि जायते पुत्रमित्र विनम॥ ९ विरतगते मेषे शत्रु नोग भयम

तु॥ अत्र राजकुलो वा शत्रु तो भय॥ किं विवानिः॥ पुथा ८ नी॥ उद्योग नाशः॥ मित्र विरोधः॥ सुख

नाशः॥ पश्चिमे तो हानी॥ स्या भवती पुत्र सौख्य म॥ वेतन्य दा या भय वस्तु व्यय नाश नेम अथ शनि

मध्ये गुरु रंत दशा मास ११ २॥ दिन २० फल मपि वन्धुरोग विनाश स्वल हृतीर्से[illegible] धे सुखानि वरवेर ॥

तं गीजिवे पुत्र म गामसपः॥ संतान[illegible] अत्र पुरायन[illegible] विधस्यै कर्म प्रीतिः तिथं जा गा या॥

5.

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सत्क्रीं न माता नु भार्यांस मागमः ॥ सेनानासुखं ॥ कुत्रापि धी ॥ वस्तुव्यय दल्लाभ ॥ उग्रपदमान्यता
दिद्धिः ॥ प्रभुता महावृत्तिः ॥ स्त्रिसुखमित्रागमः ॥ धनप्राप्तिः ॥ सतसिद्धि साहः ॥ श्रुखगजप
दि पथा संमेधं प्राप्तिः ॥ अथ रवि मध्ये राहु २ दशमा ६ फलम ॥ राज्ये मंत्री मानहानि भीति
र्विपत्ति रसुतेन ग्रामः ॥ रवेरंतर्गते राहौ सर्वग्रामे गांलक्रियाश्च सतप्राप्तिः निवसंगः ॥
पेधुनाहरः ॥ गुल्मरोगः ॥ पाखालात्तु भयमवरोगो वातरोगः ॥ मूत्रकृच्छ्र ॥ शरीरे कष्ठम् ॥ स्या
सपरीपुरुसो हानिः ॥ मध्ये स्वस्थ सु खे धनहानिः ॥ अथ रवि मध्ये १६ को नोद्वेगाम
स्वाद्धिः ॥ १४ ॥ तस्य फलं ॥ हीनः पिडाभयं त्राशो ज्वरा निरशरजे के ॥ ६ ॥ व्याद्धि नाशा
मोप्राप्ति रवेरंतर्गते हि ते ॥ अत्र शिरः पिशरहनी शः ॥ आ भूमिस्थितो भय ॥ क मलैरोगा
खरुः सुवर्णलाभः ॥ ४ ॥ अल्पसुखं ॥ अथ रवौ शपम ॥ असनी शोधा ॥ हरवि दाशामाश्री ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥४ नानस्य तु मध्याद्वा दशापर्णी [illegible] स्य फलम्॥ नित्यं द्विकोष्ठा मवं वजाम पिष्ठा तापानं प्रम
दा राज्ञो चान्द्रो दृष्टे शघुकजा लोदारांगाल मे सेव पु जांतपते: सेदया॥१॥ अस्या पुष्प गंवद्ध
से वांतर्दृश नमाशनिं॥२५॥ लस [illegible] फलम॥ वन्द्रे स्यो लग्गेते साध्य सर्वत्र विजेया भवेत्॥
अगरवि संयोगः॥ सुखे॥ फलस्या प्राप्तीः॥ मरण प्राप्ति:॥ एवं तयस्या प्तिः॥ मिषु मोजन म॥
पापुदि गोकामः॥ मध्ये दाशायां प्रवर्तिकं लम्॥ अथ वक्र मध्ये भौमो लग्नेष्ठे शनमासु॥१३॥ दि
गनस्य फलम्॥१४॥ रोग [illegible] हेतु स्तो यंकि वा रधन हृदयः॥ विषो लग्गे ते भौमे मनो
चिमं ये त्वरतो॥ स्त्रे अभिन प्रकोपः तुष्यदान्य मयमू॥ ७ भौम पम॥ पिविवज्ज्वरः॥ शत्रुं भयं म
॥ पि भूपाल भयं॥ स मध्ये स्वल्पजा मं॥ स्वपस्य खमा॥ रक्तो पिधाः॥ पिरक्तो टक भयं म॥ कार्थ: ॥५
शिर भयं॥ राजभाया संका॥ धातु हि निता॥ [illegible] दे दोषल्पम॥ अथ वक्र मध्ये तु धांलदश नमाश रक्षः

7

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

म०

रि॥१०॥फलम्॥सर्पत्रलभतेलाभंगजाश्वगो॰धान्यादिकम्॥जायतेकन्याजामवद्धूस्यातत्थीति
दुधै॥यत्रस्वरतारिधातुप्राप्तिः॥गजाश्वादिवाहनप्राप्तिः॥बुधिप्रकाशः॥नष्टधिपित्ता॥स्विश्वनप
कुलादिरति॥पु[illegible]ष्ठस्थाने स्कोविशत्रुस्य सेवमे॥उत्तमधि नोमोमः॥नपुंसकप्राप्तिः॥अत्रवंदूम
ध्यस्तेरेस्व द्विजानां प्राप्तिः॥१॥रि२०फलवेम॥वंधुवैरस्थानहानिःशोकोवाकलहाविवर्त॥
विधौरंगति मंस्वदथ्योभवतिधूवम॥[illegible]स्त्रीकलहंगः॥शत्रुभयम्॥राजभयम्॥विस
ःकादिभयम्॥[illegible]स्थारीपुत्रभयम॥[illegible]नेता॥विताक्लिष्टः॥धनहि[illegible]
पः॥योतिमोहो॥पक्षिमरि[illegible]॥शत्रुजाः॥निर्वासीर्न्या॥कुष्ठवैर॥[illegible]पः
॥धेते[illegible]प्राप्तिः॥अत्यमस्वं॥दुष्टध्वशानम॥दासिसिकुस्थिरतितो॥वृत्तासप्राप्तिः॥[illegible]
[illegible]मध्येगुरुरेन रिश्ता स्थासा॥३१॥रि२०फलम्॥सर्वभयितसुरतोतिस्थिर्यसमरस्ता॥

8

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

विज्ञेयो राशिसंज्ञामविधौ . रंध्रे तनुरौ ॥७ अथ धनप्राप्तिः ॥ धनमेव क्ति: ॥ सूर्ये प्रभोगौ ॥ गौर
॥५॥ वमंगनिमिदिश्यु स्वम् ॥ पक्षादिप्राप्तिः ॥ पितृवस्तुनो ॥ जितसिंहा द्विकरना मः ॥ वाल्ह
पुजते मशिगनवपुर्णेतो नामः ॥ पातलसुखम ॥ जमविद्या ॥ व्यासः ॥ दमेस्यभमतिः ॥ उस
गः ॥ मह्त्यम् ॥ सर्वगामान्यता ॥ वृश्चिरीरनादिनामः अपवसु भधेगतो हारंभिशामाशादिः ॥ रम
मस्यकूलेमृ ॥ वंधनो शः ॥ स्नानेना हिशत्रु वक्रिभयं भयम् ॥ नफुत्रं. पिसुवंशी होवि
लिधोरेमर्जीतेसलिः ॥ सस्पा ॥ न्नु भयम् ॥ विघ्ना ॥ उद्वेगः ॥ कलहः ॥ वैना ॥ भयम [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] कपृथिकारः ॥ हिलनो मित्रवंधुपिडा ॥ निकान्यदिक्तो नातिः ॥ धननाशः ॥ [illegible] उल्लाद ॥
[illegible] सर्वेदुच्छि नयम् ॥ सर्वत्र साशंकता ॥ सन्तोषहानिः ॥ अथवर्न्मस
यातप्रकाश: ॥ जलैविभ
धीमसुकस्या [illegible] दिशा मारनादिः ॥ ३ पूः ॥ कलह ॥ कन्या भंती सुरुपप्राप्तिः ॥ स्त्रीसंगोगपजपः सुख

मु-गा-गे ... समाप्ता मीश्वद्ध स्यांत गते तिते ॥ अत्र ... गाश खस्ति नाम ॥ अन्यच्च द्विः ॥
१० ज्रिरि नोत्स्व मः॥ ए स्यंवति जत ताद्वि ॥ बद्धनाद्वि सुगोधड ... मा क्षाम्रिः मीजेत हा स्वगिता
दि॥ स्तोद्धर्तते जेले स्मातस्वं॥ अथंडमथि र्ध्यंत हेशता म्सु ॥१०॥ ... सा॥ मू पाजवश्ह
सन्धार पुरिगत दिया मेधत शश ... सोहल नत्रुवेदस्यातगतिसे ॥ अत्र ... नाम ॥ गद्धिदि
स्तता॥ शिसेधध्या॥ अर ॥ त्रिं तांथः॥ स्तनश्रिको ... मथमा ॥श्रा ... ॥ रिपुराज्ञाद्धिबोरम
ग स्वत्वं पूर्वदितो सोमः॥ कोथः॥ वपक्षिद्धिः॥ गवराउला मिमानयोश्ता मू॥ इति वृ १॥ नता
॥ अथ नीम माता श॥ प्रवेशः पर्वा१८ख्द्वर॥ मा॥ प्रीति सो सस्वसध्न पाकिधनाति बोर्द्धह स्तिपि
से सम्यः॥ सुर्वकीता नालिति पाद. तः ॥ दाद सुश्रूं प्रवोगो पिमरस्मि तै॥ पाठोनर मू॥ शाह्य
सिद्धा॥ तेपथंधतैरश्पि डायिंतता स्ओपिकदा कामुख श्री॥ युक्ति पीति ... निजतियथतता निवं

१२॥

निर्दाभांमिद्दा न स्वप्नंगादृशानुस्या ॥ भौमे सन्तु पिमहर्दि स्याल्ले जहि थंपुष्मि न्तरागमाद्गाद्यो हि पंगुपि
स्याहहृस्त्रीगतिकायुतिः ॥ अस्यापि जे वृफोपः ॥ त्रिदि यथा ॥ शत्रुदिक्षः ॥ दृष्य स नः ॥ कुम
ति ॥ स्त्री हि ष्ठः ॥ परस्थि संगः ॥ नि चेष्टाप यैः स हफेवेहः ॥ अ चनि शत्रु ज्ञाने कोटि मयप ॥ अ
पुत्रो मे नध पु धानु दृशानुसाः १५ ॥ दिश प्री २० ॥ केन मः ॥ मृ तो थी नपथी हैस्या मध धिद्भ स
नाधिपः ॥ भामे जै दोनैसी हीपके ला दूजे लाद्यो भेः ॥ अ स न्तु यो धा चिन्ता ॥ थंगु थ दृ मं यंद
हानिधा ॥ वौ मय स ॥ नेष्टः ॥ पुत्र प ॥ ये मय स ॥ हिरः २३ ॥ उक्तं लो हानिः अपु
यः ॥ अमौ नष्टे शनै धीरा नाशः ॥ दि २९ ॥ ५० ॥ लमः ॥ ना हा धुर तिवां पन
जेः च गिनि मनराम ॥ भीमूस्यात्मं प्रे ने मूहरी जो पि श मूद्दे रोगम ॥ व्यो हा सिनना ये ॥
हानीः ॥ उष्णकिहाः ॥ पस्वमू हा निः ॥ कुम त्रि ॥ जीव संगनिः ॥ उग पव हि हिन
॥ सर्वं स्यपरि वी नी ॥ सर्वं सूता हानिः ॥ का लपुत्रो नाथी स्यनिः १९ ॥ ८० ॥ स्वमे ॥ अपर

KKSU LIBRARY
RAMTEK
441 106
M-1883
Dist Nagpur

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

निष्ठितं तदेव कल्पातोर्द्ध पातिलसूर्यरश्मि दिशा तथैव तत् स्वभं भवति ॥ अथ भौमस्य धेतुरुरं तद्विण मासाः ॥

२ दिनं १६ घटिका ४५ ॥ फलं ॥ ५ ॥ पुरावति थाधिदिशं मन [illegible] युध्वा [illegible] ता पू [illegible] नभ ॥ भौमस्यास्तं हि जीवल

निधि [illegible] १८ ॥ [illegible] ॥ तोर्न [illegible] जने क्षेगति ॥ ० [illegible] पने ॥ स प्रितिः ॥ ५ ॥ भौमस्यास्तं के [illegible] ॥ दि ॥

[illegible] तेश्वा ॥ इति तद् [illegible] जे लाभस्व [illegible] प्रि [illegible] जेधति यं त [illegible] ॥ [illegible] तन्नष्टे क्षिति वि [illegible]

जनो मय मो [illegible] प्रतिः ॥ [illegible] खेन [illegible] ॥ दि मे २ ॥ दिवि क्षिपेता ॥ अथ मध भौमस्य धरा हां तद्

२ मास ॥ १ ॥ दि २० ॥ १८ ॥ [illegible] ॥ म २ ॥ दिवा चिन [illegible] शतं भौ तिर्यन्त [illegible] पुन्या ॥ [illegible] मस्यो

[illegible] मनोद्धः [illegible] जयते ॥ [illegible] २ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ खाविवो ६ भयम ॥ ७ ॥ [illegible] यत तम [illegible] सूर्यो हा तिः

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] कम ॥ ५ ॥ दिप्र [illegible] ॥ [illegible] तिः ॥ [illegible]

[illegible] अर्थ हानिः [illegible] ॥ [illegible] ॥ संका ॥ अथ भौमस्य धे क्षिति [illegible] मा २५ [illegible]

[illegible] ॥ जिय संगः ॥ निधायै [illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] कोधः ॥ धनता तिः पुरवध्य [illegible] ॥ भौमस्य

[illegible] २ मा स ॥ १८ दिनं २० ॥ फलं मस्य ॥ २ ॥ [illegible] सिति मिहा [illegible] कोधः ॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

लर्मि नेरा के रूपा स्यपंथुतो सुरतो अथ स्वरंगाणु कोपः ॥ म पंथी यी फलं ॥ नै हिन्य रि को मर्पं
१७॥ वतथ मेता ॥ पुनि दे सौख्यं ॥ धा नाहि मेपम् ॥ अथ भौ म थे रवि रंत ह ॥ ग मा सा पू ॥ दिष्ठ फल मथा ॥
सत्मा न नु पत मूरि प्रयंड: ॥ सह संगमि: ॥ पशु मा न ता ॥ सथा ह गे सां त ग हि भानौ मये कुखो सा
मा गमः ॥ अथ सोह रतिः भ वभू मा न्यता: ॥ सचा मे जप: ॥ र्थ न प्राप्ति: ॥ पूर्वे दि रफो लोभः ॥ पाख्य
स्य भ पेहा यी ॥ गु रि रि यो स ना ॥ मंदो भो एव [illegible] दा विस ह फलं डै: ॥ उठि हो ॥ नैव ठिना ॥ गल
गंड क रो रोग ॥ अथ [illegible] तु स्या ग गो दि धे [illegible] [illegible] द्व मा स ॥ ६ दि ने १० ॥ [illegible] न सुख ॥ [illegible] तं स
कृते सो ख्यं [illegible] ह [illegible] मा सा त्रिय पम् ॥ भौम [illegible] न [illegible] तौ है वंदु [illegible] पति व र मं न रे म ॥ ख ॥१७
त्रेना नाप्राकाश सेला [illegible] ॥ मन्दामु [illegible] विदु [illegible] तो प्राप्ति: ॥ गिर सौख्यं [illegible] त्वो हा ॥ मा न पुत्र
लि नि द्वि [illegible] सुख मा प्या पशु न र तो [illegible] ॥ [illegible] समा प्रा [illegible] अथ बुध [illegible] रुराव ठो
मधो
माहा

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

13

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

रिः ॥१६॥ कुल्ने मस्य ॥ सा [illegible] प्रो विंसो मध्य कृशाचिम्पावेश मेम मा नि प्रियमित्र संगमः ॥ सवर्णे मामा
रूप ऐंसा मे विद्यार्थना मं मन सः प्रमोदः ॥ [illegible] गुरुमे बुधस्ये तीन दिशा मासः ॥१२॥ धो न नेमः ॥ [illegible]
नेर्जने सो [illegible] बुद्धि [illegible] समागमः ॥१३॥ रिरेचिमु सं याति [illegible] लि नेम [illegible] ॥ [illegible] नेनुराहीसुखं ॥ [illegible]
धनयच्ना दि इजिः ॥ हां स [illegible] नीडारतिः ॥ मित्रपुत्रैसुखं ॥ १७ समागमः ॥ [illegible] शर्मा विधां तु भारलाभः ॥
विद्यां [illegible] बुद्धि मन्त्रान्यासः ॥ कोपः ॥ १८ वैत्र बुद्धिः ॥ शरीरे [illegible] विकारौ पा उ तर दिने लाभः [illegible]
भातु भारलाभः ॥ विद्या बुद्धि मन्त्राभ्यासः अथ बुध मध्ये शनि [illegible] तदिशा मासः ॥ १९ ॥ [illegible]
धुधि ४० ॥ नृप [illegible] नेमः ॥ मित्रार्थ [illegible] धर्मः ॥ [illegible] बुद्धिः ५ पाथ मार्थ [illegible] ॥ सर्व [illegible] घ मि मास्याने
बुधस नगति शनि नो ॥ [illegible] रिनो [illegible] मोह फः ॥ धन [illegible] लाभस्य ॥ अकोन धन [illegible]
[illegible] सुखं ॥ बुद्धि पद्धिः ॥ १८ हेतु शाला ॥ याल्लस्य ॥ सित्पे रतिः [illegible] मध्याधा ॥ अथ बुध [illegible] गुरोतिं

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥८॥ दिश॰ ॥ मासतादिः ॥ ३५ ॥ दि २६ घ ४० रिपुरोगजनपैस्त नोध मेत्रीन्नपवसे मेहा हि भाक्तिजतरे भाष्ठे बुध स्यांगे
॥७॥ तेगुणैः ॥ बाह्रकहसातिः ॥ सर्वशत्रुनाशः ॥ नृपतो रखं ॥ राज मन्त्र ॥ महत्व प्राप्तिः ॥ शरीरे पापित्वं
सत्यधारथ मंतिर्थप्राप्तिः ॥ हित सुख सुख ॥ दिशा नृप गैलो जार ॥ गुरुं [illegible] दिप्राप्तिः ॥ अथ बुध मध्ये शैद्रै
तर्दशा मासः ॥ २२ ॥ दिन २० फल मसः ॥ अफका बुध मेले पापयोः स्वाद्दुजतीनपातः ॥ मंबंधा सर्वनी
शी पागहो सौम्यातरे सति ॥ अत्र साह सकतध्यथा ॥ जैरी तिसोः औलाभः ॥ निवासुखं ॥ अथ बुध म
ध्ये [illegible] नेदशा ॥ स्त्रीजंकर रत्नो स्वलाभो ॥ रस्यांतरे स्थिते ॥ यश्वको मातृ जाकुरि संगः ॥ सुप
प्राप्तिः ॥ वीमि लपुत्रेभ्यः सुखं ॥ द्विजपक्षु लाभः ॥ प्रश्रिम जादिके तु ॥ [illegible] अचौ दिक ॥ सुखं ॥
नतिदीय प्रभुः ॥ अथ बुध मध्ये रवेरंत दशा १ मासः ॥ दि १२ फलं ॥ सूर्यरा [illegible] यमारि [illegible] पविजे
लमतेद्दुःखं ॥ अत्र पुत्र [illegible] सुखवे [illegible] कृष्णि पंचवलंतैजो बुध स्का [illegible] तिरवी चक्र सु रतिफा
त्रे [illegible]

16

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ष्टारेत्स्यतादिराखं मर्यां॥ किंक्रिविस्तत्यंविंविरसस्वंयाकुम्न ८ श्ला च्छिल्यं॥ १७ जङ्गरेफिंवक्तां॥ माहा

माहस्त्रम्नाप्तित्ति:॥ अत्रपुत्रेजस्त॥ पुत्रयुतं वे॥ धर्ममतिर्थैप्त ति:॥ पं:ह्लिकोश्ला म:॥ फुनकाङ्

ङ्गिङुमाप्राप्ति:॥ अरवादि वस्त्र द्वाप्ति:॥ अकेसा॥ [illegible] वितितपवस्तुप्राप्ति:॥ अथबुध [illegible] यह्लात दृश्नतास

॥२८॥ दि:१३०॥ फलमस्या॥ कृताचारथान्यं तुपनीगानाञ्चादि स्वप्न प:॥ बुधस्यांत [illegible] तेन्वेव

वकस्त्र संगदि:॥ अत्रशारीरे [illegible] माकम नाद्दि:॥ ह्सि [illegible] तम पमा॥ सौख्यार्त [illegible] स [illegible]॥ अङ्ग म

पीडा॥ बन्धुमरणं वा॥ पापदृष्टे लोभ:॥ अर्थविनाशमाप्नोति:॥ अथ बुध मध्ये मौनी ख्यातमास:॥ १ पा॥ शि

वा॥ २९॥ फलमस्या॥ शिरोगुरुरुजा पित्त [illegible] रन पाम्स्यमा॥ बुधस्यांत [illegible] नेमेधु [illegible] दिपिडन

मा॥ अत्रकाय [illegible] सा [illegible] रोगं॥ धातुलितानां [illegible] याद्वितो॥ स्यातवेश:

:वीरमवं वा॥ दृष्टीनेत्रोहानि:॥ हात्रे पाद पमा॥ इति बुध दशासमाप्ता॥ अथ शनिदशाहशाव्

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मि

।।५०।। कलस्य फलं म।। प्राप्तिर्थ तेरस्य द्रव्य हानि पाके ७०।।शि सीमा गिरि रत्नं तोषा फल धान्य घनि रामी
गुर मूमि नाम सेपूज्य तेरैव भीहा आदि ... स्या।। ... प्रथम ... पीडा जन्म ६।१ मासः।।११।। दि।।३।। वृद्धि
फलं म्।। स्थिते।। अत्र याम रजर विना।।२।। मन व।। पक्षि म... म पून।। हित बुद्धिः।। जन्म ... १।२
मप मनि ... ।। अ श्री ... तव ... पम धनम्।। अथ पुराणि मध्ये गुरु ... ते ६।२ मासादि।।२४।। दि
... २० ।कुलेमस्य।। ... धनपा।१८ द्वितीये ... स्थान प्राप्तिः फल मनो
प्री स्वर्ण ... ।।स्यादि पप्राप्ति नमतिः।। धन प्रीः ... मः।। सुखं ... ।।
पुन्यातिर्थ प्राप्तिः।।७ सा ... स्थान प्राप्तिः।। ... मः।।७ ... सुख प्राप्तिः।। स्त्री
चिमा या मादि ... मः।। ... प्रीतिः।। ... प्रीतिः।।७ ... ।। पुत्रादि
सुखं।। मित्र ... ।। ... प्रीतिः मध्ये किंचित् ... सुखेम।। अथ ...

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

म ध्येतत्रे रंतर्दशामाहस्या ... गृहाद्विरुकुल्ययुस्वापात्तरोगान्॥ कुछिपिंगोदरांतंतरा जतीभवेत्तावं
पुरेषः॥ स्त्रुवाभाधेरात्रौ शनिदशागते॥ अथ महलिनिडः॥ सन्निपातभाला रोगः फलरुहः॥
अंगपिडा॥ रक्तातिसा ... कोपः॥ ... घासपर्वाभयम्॥ संपद्धानिः॥ नैऋत्य दिनेश
निः॥ ... विसुख्यम् स्वक सा कालरुहः॥ अथ मध्ये सुखान्तर्दशामासः॥ २३॥ दि॥ फल म॥ पंधुमि
त्र फलंचार्थ सुखसंपत्स मागमः॥ ... हार्दनपतेर्जा ... मशनैश्च ... गोनेसितैः॥ अमित्रवंधु
सु मागमः पुंस्त्राहादि सुखम् पुत्रमित्रादि ... ॥ स्त्रीप्रीतिः॥ मादितेसंगमः॥ ... सौ
प्राप्तिः॥ कफ ... शैल ... विकारः॥ सर्वमागत्य मित्रवृद्धिः॥ भौशरिरज्य दुःखे नश्यि फलरुहः
॥ अकारा धनव्यय पंः॥ अथ शनिमध्ये रविदशामासादिः॥ १०॥ दि फल मा॥ शनैरंतर्गते
भौमे सर्प चौर ... दशास्ता ... अत्र रिरा ... म्॥ नैऋत्य दिशो हानिः॥ ... मन्त्रं मित्रैरणाय

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

१० दधः॥ यथ शालिमध्ये च मूलात द्विमासः॥ खिलस्य दिनरु फलं स्वः॥ गाश्रीलाभं विजयं सौख्यं मतिकृत्य कोगोध
॥ नादि फलम्॥ चमनेधो न्याः जं नशानेरंत गनेधिधौ॥ अथ मूलाता मनि पूर्वलाभः॥ ऋक्षं॥ संतो
हः॥ ६ हि के द्वि फन्यायु॥ मिळ नेत्रालाभः॥ गो स्वादि सुखं॥ धी सुखं॥ द २ नै नेत्रौ पुत्र २
वैरस्यक्यादि विडा॥ ६ तरादि नौ लाभः॥ अथ शालि मध्ये मी मातर्दश ता नासः॥ दादि॥ रुद्रा॥ धुपि ४०
तस्य फलम्॥ कुं पं धुस्वि सुनी नासो याविषु दुत्पात जं भ यन बाध्या धि रवि ळ पा शा तेरं
तगीते कुजे स्थान ४ छठो मथुनि शरि रेक ळ पि बादि वि ळ विका पाथान स्या रागि मू मि पाळ ॥
नादि नवम्॥ पंदु विधा विता॥ रुधि रवि कारः प्रमेठादि हिताव २ दि ने विता॥ चारि ळमाठ
नठ स्यात देवि क्र हरी फाराधा यिंतो॥ पति अश नित ध्ये कुणं तदं २ ता॥ ११ दादि धुपि ४०
तस्य फलम्॥ स्वर्णं सौभाग्यं मारोग्यं यशः सन्तोषं कुषः॥ सुह स्या नादि लाभ स्या पुनेरंता

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ अथ वृद्धिप्रकारः ॥ स्वर्ण सोमः ॥ उत्तर शिशिरे सौ लाभः ॥ पुत्रजन्म ॥ नाथ मान्यता ॥ लिखितं पठनी
ति कृशानो ॥ तिलकल्क हीरस्याधिक रत्नम् ॥ इति यदि माहादाश्रम माप्राः ॥ अथ गुरु माहात्म्य
वर्णादिः ॥ न स्पर्शेनम् ॥ गुरु दिश ७ पौष मैत्रे ८ मिसी हस्त गुरौ रविपंचमे वृष्टि तत्र ॥ शीघ्र
नेत्रां भु लिफां त मीन गतो हा त्रिवेणी फलेन मु जाता याम् ॥ अस्या प्रथम मध्ये अंत ६ १ ८ मा
सः ॥ ५० दिन ३ घटि २० फलं स्या ॥ स्व १२ अंतर्गति वैधर्म्य तीर्थ हस्ता लाभः ॥ नक्षत्र मास मास पारं वे
ताव जपुत्र गुरौ ता हृदः ॥ अ त्र २१ न दिशो लाभ सुवर्ण पिनव सुता मः ॥ पुत्र प्राप्तिः ॥ अथ मध्ये ॥
अथ गुरु मध्ये ८ ता हा रंत द २ न मासः ॥ दृष्टि नो १ ॥ फलं स्या ॥ यन्य रौः ॥ अह संपूर्ति वीनपी
नाशा मया ॥ गुरो द रं तनि ते रा हि सर्व कार्य विना सनं ॥ छत्र भिन्न म्नान विरोधः ॥ कोष्ठकः ॥ इति

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥ ११ ॥

॥

कस्तु पापारता द्विपिंडा ॥ धातुपिंडा अरसथं मे ॥ मतुस्तारिक्त मध्यपुराणी जवारिपुरा कृता मथे
नरराम् ॥ स्यात मैशः ॥ जैले मपमसर्व पि यादि मपम ॥ निवैः तुष्टे पसिह विरोध मयम
॥ शास्त्र पाणि निमज्ञ दृष्टि कौशानि मप ॥ विंता ॥ तस्कर मपमा ॥ १ पम यर्व सीम् या ॥ ७ श्रीस्या
तः ॥ ८ ह ॥ नमथ्य ६ सुरणं ॥ क्षिपुत्र कौश ॥ मृगुरू मथ्य २४ कांत ॥ दिशा मासः ॥ ४७ ॥ ९ ने
२० कलेश्या ॥ रिपुमित्रि तिनाशौ धावंधनं कलहो गदः मैत्र मति विधशः खी वियोगा ॥ ६ ते मे न
शह कलह ॥ वैधव्य विरोधः ॥ बधी दृष्टि कोशनि ॥ धाठुन रात्रि वि दुप्रकारः ॥ ७ अपर मथ्य
रविरंज दिशा मासः ॥ १२ ॥ दिने २० कलेश्या ॥ अपतुष्टे श्री पायु ताउरें तु गरियो ॥ अथ ॥ २
३ शा ऋतु नासः ॥ २८ विंध विनि ॥ पद्मी मुकिसंतो कांत ॥ तामगें रियो ॥ जपस्य पृष्टि:

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सुखं॥ राज मान्य ता॥ जशो वृद्धिः॥ पान्तु किंचित् ज्वरपीडा क्वा शिरो रोगः॥ द्वा लोगा मंगं
ल जो ता॥ अथ विधान जनितो विशेष फलः॥ फलं बुहः॥ ८ जन्मतः १ पूर्वार्द्धे ०॥ ६ ५ ६ मः॥ फलं बुधे
२ नीत स्वउच्च फलः॥ अथ गुरु मध्ये वर्ष २ मासः॥ ३ ५॥ दिन १० फलं स्वा॥ [illegible] ॥ २॥
गुणानि सुखं पुत्राय वि जे पो ७ व दर्श प्र दांतं धः॥ स्वार्धा भे नगु ते रक्ते नैधौ॥ अथ स्त्री सुख
॥ फल मध्ये॥ २ शि॥ रोग कोउ स्नोज न मा॥ [illegible] उ नै मि सया ना २ नु उ च्च मि त्रा दि
सुख मा [illegible] च लव सुखानि॥ वा ष्वो लाभः॥ किंचित् क्राशः॥ अथ गुरु मध्ये मौ लान दिशा मा
सा दी न दुःखा नि॥ फलं स्वा॥ धन कि र्ति शत्रु हानि वंधु मित्र सुखानि॥ निरोगि सुमे
श्री मा गुरो रा ज्यं नि फु जे॥ अथ मज यः॥ [illegible] सं॥ भार भे प स प्राप्तिः॥ ६ हिन श्री

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ह्रं नगसिंकृजः ॥

१२ नगाकि त्रिंश शोस्यवस्रा ॥ जमपम ॥ ज्य रसमपं स्त्रीपुत्रयशोर्पी ॥ आरंभे मध्ये वा ॥ अथ गुरु मध्ये बुधांत दक्षि
णासः ॥ ३ ॥ पादि नारसा ॥ धृति ॥ ४ ॥ फलं सत्सः सुखदं [illegible] मः श्रीमान गुरु [illegible] ॥ गुरुसहं गोगेन सौम्या
शास्त्रि सम्या भवेन्नः ॥ अथ लाभ व्यय सुख [illegible] अवस्था सेजयः ॥ सुखोभयं ॥ अथ त्कृ वस्त्रं गोमः ॥ इति नदित्तो
लाभः ॥ कि त्रिगुं शोस्यमसा ॥ जमपम ॥ ज्य रसमपं स्त्रीपुत्रयशोर्पी ॥ आरंभे मध्ये ॥ अथ गुरु मध्ये
बुधांत दक्षिणा [illegible] मासः ॥ ३ ॥ पादि नरसा ॥ धृति ॥ ४ ॥ फलमसा ॥ सुखदं स्वसमः श्रीमान गुरु दोषी
[illegible] पूजकः ॥ गुरोरं नगन्ते ला [illegible] रा ॥ मित्र समानये नो ॥ अथ लाभ व्यय सुख दुःख साम्यम ॥ [illegible] रो
लाभः बुधि प्रकाशं बुद्धिप्रकाशः [illegible] महा नपुंसकता अथ गुरु मध्ये रानि रंजन दशा नासः ॥ २ ॥ ३ ॥
२ ॥ फलमसा ॥ पारोक्षि संगमं दुःखं दुखं धिं धर्म नाश नमः ॥ लोभ मलोभ नं निर्वसो [illegible] गुरोरं नगन्ते
शालो बृहत्किरा व्यसनोत्पत्तीः अथ [illegible] धर्म प्राप्तिः पित्रका टफ भवं [illegible] विदशा गमनेभा [illegible] पुरुषान्य

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

खिमर्दिलंकामपमामहिमजालमश्रपानां रोगमर्पमा॥ हातिर्गो पुत्रैः सहविरोधः॥ इतिकुरुठमहाद
शुनसमाप्ताः॥ अथ चहुमागदशनकादिः॥ फलं मस्पध मे पथ पूजा मरतिथि ना शा खिमित्रपुत्रादि
विरोध॥ जीनं मति ष मंकालम कुठरोगं मयं मवे ह्यहूदशनमे मशो॥ अथ सप्तम समस्पधुं
नर्शनमासा॥९ फलमस्पमपं स्थान तज्जित हीरोगनं पापापीडितः स्त्रीमित्र पुत्रनाशो धातंक
न॥ स्वपृथुनः॥ अथाष्टमपं॥ मूत्रकृच्छ्र व्यथा॥ नियसंगः नेत्र मर्दि कोमयम॥ अथ कु
कुमपि शुक्रानदेशमासः॥ रस्थ फलमस्य॥ ह्रीत्वं विप्रभुपाम्पासंग हो पितने सहबंधः॥ कुलहो
विजपूः ख्याति तहि रक्तं दुगते पितृ॥ अथ नवम दशमि रेव्यथा॥ धान्यहीन नारोगः॥ नेत्र
पादिक भूयमहि हृरयो॥ स्वल्पप्रापः॥ पिडा॥ अथ राहु भये रविरंशं दशगमासादिः॥ फलम
स्पा॥ रिपुरोगमयं चोरे॥ दुःखनाशं महत्स्प मूत्रं भीर्वो रमयवै पुराहो रंजगतेरयो॥ लं

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

सिमि

२६॥ त्रेजन्मनम॥ पत्नायत्नमना प्रवास. ऋरपिडा॥ कर्मिमनयमत्योक्त विशेष॥ अथ राहुमध्ये चन्द्रांतर्दशा मास
दि. १२०॥ फलं स्या॥ रिपुभ्या पिडा [illegible] बंधु पिनविनाश नमा॥ फलेहा बंधु [illegible] राहोरंतर्गते विविधौ॥ शु
भ्रसीके [illegible] फलं [illegible] मतिभ्रष्टः॥ अथ राहुमध्ये भौमान्तर्दशा मासः ११ दि
१८॥ फलं स्या॥ पिशुन [illegible] पुनः॥ राहोरंतर्गते भौमे [illegible] पथु [illegible]
[illegible] ॥ अथ [illegible] ॥ [illegible]
राहु [illegible] मध्ये बुधान्तर्दशा मासः॥ २२ दि २०॥ फलं स्या बंधु मित्र फल [illegible] वित्त मित्र
[illegible] राहोरंतर्गते बुधे॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ अथ राहु मध्ये
शनिरंतर्दशा मासः [illegible] दि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ फल [illegible] ॥२८
[illegible] राहोरंतर्गते शनि [illegible] ॥ [illegible] विक्रोश [illegible]

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

डा ॥ कृष्णपक्षे तु हानिः २ ॥ फेना ॥ २२ ॥ फ ८६ फ ४० ॥ यौग श्रीविष्णुस्त्रमंपूर्ण ॥ पवहानि ॥ दास
पिडं ॥ अथ राहुलथिगुरु २२ गना सः ॥ २५ प्ति ॥ १० फु २ म स्त्रा ॥ नि रे गि स्वरु रोर्थ मो
लो २ पुच्छि ज नं नो मं थे ॥ रोहा रं म नर्गा ते जी पें धर्म ति र्थि १ नो मं थे ल ॥ अथ वं ङि नो
र्च प्राप्तिः ॥ अतिथि पुजा ॥ च्य २ फं स्मा ॥ श्री पुस मा ग मः ॥ तो भो धा न स रवे मूं
॥ इतिरा मा हा द २ ग अथ सु चं मा हा द २ ग पर्यो ३ ॥ फ लन स्पा ॥ लो स्या गी ते
र्यतिः पूर्णो यू श म यु द ध्या न पा नो यर मुक्ति र ल पु नि न पो पुर २ तो २ थी स्व नी
ना यि थेः ॥ स्पा ध्या यो अथ मन २ शि ल्प फ २ रो २ यस्य शि द्धि म पे नो ॥ मं ये पु वि प ॥
फल

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥१४ यमोजनरा ॥ गृह्यातीः प्रान्तापो न्यो ति ॥ स्वेह कोप्यवान्ते हि ता मा हः ॥ ४८ फ्रुस
॥ जो मः स्था रोहद्वे विश्व गो धर्म धि सुखेम ॥ ख्य मि ना लो पे पु नो र कि जि को श
येकू मे ये ते स्व ब्र के न्या न ख्ये न पक्षु १ पक्ष प्राप्तिः ब्र मु मा न्य जा पोह ता प्य प्राप्तिः ॥
ब्र मे र रा ॥ प्राप्तिः धर्मतीर्थप्राप्तिः मि ठा न्ते गे लो प मो गं: अ सी दि तो जा मः ॥ वि
लि वः द्वी बा रजो मः ॥ मध्य द्व मु धे र वि द्र स न मा हः ॥ ४९ फ्रुले मा ॥ गाये गड मे वे ते रा
वि श्री ने न्न प वां प ये ॥ उप पा जो म्ना हाड्डं ते रद्रे स्मा ते ग ने र यो ॥ क्व चा स्व मा ष ॥ ग
प्यर यो पा बा दे मे या ॥ म ते सि यि ना ॥ स्वे पं ळं रा रा ता रो र्ध द्वा ॥ प्र म या का स्मे ॥१४
ः य मा ॥ प्य र ना ल ले ला रि म ष ष मे द्वध वि वि पा द्व म ण म उ जा ते न ग्स ह वः पि नो
१२

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

प्रकोपः ॥ अथ सर्प्पपितृनये दानं ॥ अथ सूक्ष्मा मध्ये च भूमत दिशा मासं ३ ॥ फलं स्या ॥
उद्वेग शोक्रु शोकेन हानि रुपा दौर्बल्य धन कुपः पशुक्लेश रोग भागना ॥ कुः स्वंशरु स्यात् र्गं तेविधी
स्वर्गतनये त्रैधा ॥ श्री सूर्य ॥ प्रणेतिपि स्नानं ६ मू ॥ कुहस्थ भौमा ॥ आयुः कु केतु मधे
भौमान्तर्दशा मासः ११ दि ॥ दि २० फलं मृ ॥ नैरुद्व स्नेहिरोग्यं पि: ॥ फलेहानवंधु स
लेषः दौर्बल्यं वैरा ॥ स्व कुजे सूके दाहगं ॥ अथ ग्रहाणां संपाने प्रयाधा ॥ निवापे
तिला भाः पितप्रकोपः ॥ रिदिरोगः ॥ १२ ॥ रितु तीर्णा यो धायो ॥ यो उपरः ॥ भूमिविव
यश्राप्तिः अथ स्नाम भौमः ॥ वेतु अद नवसाय ॥ छा दापिडाधा ॥ म हि स्वपतमान
स्कादा दिनो नवम ॥ अथ सूक्ष्म मध्ये बुधस्योत दिशा मासं ॥ ३ ॥ दि ॥ २० फलं स्या

2[?]

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥१५॥

धनं धान्यं सुखं लाभो मानो धर्मो यशः सुखं ॥ मानं जनेन सौख्यं च दुःखं स्यान्न गतिर्युधे ॥ ख्य
त लाभः ॥ सुखप्राप्तिः पुत्रिणः कार्यशः ॥ पुत्र महोत्सवः ॥ मित्र संयोगः ॥ ३ भूर्लोके मान्य मे
सर्वेषां मित्रता ॥ ७ जलेत्सो लाभः ॥ वृहस्पति फलं ज्ञेया पालिख्यते पंचकाभ्यासः २ गीतया ११ र
॥ ६ ज्ञ क्षिप्रं शुक्रे मध्यशानेरं तदर मासः २२ पद्दि १२० ॥ केवल स्य पुत्रः स्त्रीगमन मि
त्र नगरे च सुख संपदा ॥ शत्रुनाश माधिप समा मित्र सु [illegible] प श्रिम गो जाभः ॥ कुल
कुलाभा पाता विधेयं न ॥ जलविकारः शारीरे वैद्यम् ॥ चित्ते भयं ॥ युद्धिक्ला त्विया
लाज्ञोत्तमय योरसा यथा ॥ ख्यत्र पलिपुत्र पदानेन ॥ ख्यवत्कें मध्ये गुरुरतादृशी
मासाः ४४ ॥ ६ दिन २० ॥ कलत्र सा ॥ धन यथा [illegible] विद्या सम्प्राप्तिः ॥ ५ मी सुख संपत्ति

॥१५॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

मो॰

मा॰ तिह॰ स्पांतगतिकै।।ध्यथज्ञानलामोधिमीप्री।।हस्यान पतिलामः।।ग।मनिस्तंबं
।।वमुमा स्मी।।पितेवसिप्रा।।उतयातेाामः।।बुद्धौविद्धि।।ध्यहके मध्येरुरंते ही मासः।।
रहा कुमस्त।।पिदागै तेवंधेश्रुः।।स्वगस्तु हवधः।।स्वधृदग नाशमापितियहोसुकेरा
धृगतेन्ये अरलोदिये ध्याधी:कायासधा।।कामवेरेगः।।अजेदितेनन्नाथधाश्रोशगतेक्षा
दिक्मोनु दिगा।।तियाः स्वधम।।हा पांशेत्वाहु वमा।।पानध्यदात्मनीः।।तियामनिधा
धिफुपं।।निषेधः सहसलोःस्वमापदिः दुः।।धिवि धावल्यम।।पांधिपेः सह कलेहः तोपेद
।।ध्येमाहा।।निः।।ध्यायेशु तेमध्यमददाग घूम न।।इतिसकोमाहादा।।गसर्वृदा नः।।ध्याथ
उकातेमदैतमू।।ध्व सेन्यन।।गः वृद्धि वेदयानेदिपः ज्ञानेतपाहाः पंथ ध्यातावधिःपेवे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[illegible] ॥ [illegible]

लरुत्तोफारवि:॥३०६५४०॥२४॥४०॥५०॥७०॥६०॥१०५॥ मुजांनर [illegible]

नाहुतीनागवेल्लै:॥१२॥ कुलैप [illegible] दिना [illegible] विदशन [illegible] ॥ नाथा [illegible] दशना पांश्री [illegible]

वि वांनईहश [illegible] ॥ मुजांत पीनाथा [illegible] विदशन पा: [illegible] मात ॥३॥ दा२ न२ न२ न [illegible]

पुनईश्न [illegible] प्राप्य [illegible] ३२४ [illegible] दिन [illegible] ॥ भवे [illegible]

वातदशन [illegible] पा॥४॥ [illegible] विंशन सर्पा:॥ [illegible] दा२न दा२न [illegible]

नामासपूर्वकां [illegible] दश२न [illegible] विदश२न नाथा॥५॥ दश२न [illegible]

[illegible] ॥३ [illegible] दिनां [illegible] विदश२न [illegible]

[illegible] दश२न [illegible] ॥ इति श्री पार्श्व [illegible]

[illegible] दश२न [illegible] ॥

KKSU LIBRARY
RAMTEK
441 106
M-1883
Dist Nagpur

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=20.10.20 17:05
,TRANSFERRED=2020/10/20 at 17:10:53
,PAGES=32
,TYPE=STD
,NAME=S0004260
,Book Name=M-1883-DASHAVAR DASHA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection